Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 3, March - 2026

DOIs:10.2018/SS/202603013 --:-- Research Paper / Article / Review

भारतीय अर्थव्यवस्था और विकेन्द्रीयकरण

डॉ. सोनिका

सहायक आचार्य वाणिज्य, नगरोटा बगवाँ (महाविधालय)

Email – sonikadhanna8899@gmail.com

शोध सार: अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित निर्णय शक्ति का सरकार से स्थानीय व्यवस्था या स्थानीय सरकारों में हस्तांतरण (पंचायत व्यवस्था) अर्थ व्यवस्था का विकेन्द्रीयकरण है। स्थानीय सरकारों या पंचायती राज व्यवस्था तथा विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था का इतिहास अति प्राचीन है। प्राचीन भारत में यह व्यवस्था पंच परमेश्वर व् सभा समिति के रूप में अस्तित्व में थी और भारतीय अर्थ व्यवस्था की नींव में प्राचीन ग्रामीण उद्योग, ग्रामीण कला और संसाधन थे। इस व्यवस्था ने प्राचीन भारत को सम्पन्न और खुशहाल बनाया था। यह शोध अध्ययन भारतीय अर्थव्यवस्था के विकेन्द्रीयकरण या आर्थिक शक्ति के स्थानीय सरकारों में हस्तांतरण से भारत की अर्थव्यवस्था के विकास के लक्ष्य को जानने पर आधारित है।

संकेत शब्द - कुटीर उद्योग, प्राचीन अर्थव्यवस्था, प्राकृतिक संसाधन, विकेन्द्रीयकरण, ग्रामीण सरकार, आत्मनिर्भर।

1. प्रस्तावना :

भारतीय अर्थव्यवस्था प्राचीन काल से ही विकेन्द्रित रही है और अर्थव्यवस्था का आधार कृषि, वन, कौशल कला और सम्पूर्ण प्राकृतिक संसाधन रहे हैं। जिसने प्राचीन भारतीय ग्रामीण जीवन को धन-धान्य से परिपूर्ण रखा। बदलते समय और भारतीयों के राष्ट्र जीवन संघर्ष ने इस सम्पन्न व्यवस्था को नुकसान पहुँचाया। स्वतंत्रता के बाद की बनी योजनायें भारतीयों के जीवन में कुछ खास परिवर्तन लाने में सफल नहीं रही। सरकार और नीति निर्माता अब विकास और योजनाओं के आधार में परिवर्तन की दिशा में सोचने लगे हैं। परिवर्तन की इस नींव में अब आधार प्राचीन भारतीय व्यवस्था ही रहने वाला है। प्राचीन भारतीय व्यवस्था की जब बात होती है तो ग्रामीण व्यवस्था और ग्रामीण संसाधनों का महत्व बढ़ जाता है। जिसने भारतीय समाज की सुद्दढ़ आर्थिक नींव रखी थी। परतन्त्रता के दौरान और स्वतंत्रता के बाद भारतीय व्यवस्था की यह प्राचीन कला उपेक्षित सी रही। 73वें और 74वें संवैधानिक संशोधन के बाद स्थानीय सरकारों को सशक्त किया गया। जिसने ग्रामीण सरकारों के निर्णय क्षमता को बढाया। 73वें एवं 74वें संवैधानिक संशोधन के बाद स्थानीय विकास में स्थानीय नागरिकों के निर्णय को स्थानीय सरकारों में, महिला सशक्तिकरण और महिलाओं की सहभागिता, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं में तेजी और सरकारें जबाबदेही बनी। यहीं से प्रारंभ हुआ स्थानीय उद्योगों से स्थानीय विकास, कृषि, वन संपदा का उपयोग, स्थानीय स्तर पर आवागमन की व्यवस्था आदि।

अध्ययन का उद्देश्य यह है कि अर्थव्यवस्था के विकेन्द्रीयकरण और ग्रामीण उद्योगों से भारत की आर्थिक विकास की संभवनाओं को समझना। अध्ययन व्याख्यात्मक और वर्णनात्मक है। अध्ययन में द्वितीय स्त्रोतों का प्रयोग किया गया है।

आधुनिक परिपेक्ष्य में अर्थव्यवस्था का विकेन्द्रीयकरण मशीनी उद्योग से मानव श्रम का प्रयोग है। विकेन्द्रीयकरण ग्रामीण उद्योग व् छोटे यंत्रों के प्रयोग व् विकास पर आधारित है। इस सम्बन्ध में गाँधी का आग्रह था कि, "यंत्रीकरण की सारी योजनाओं में मनुष्य का स्थान सर्वोपरि होना चाहिए। केन्द्रीयकृत अर्थव्यवस्था दूषित अर्थव्यवस्था है। क्योंकि मशीन के प्रयोग से व्यक्ति किसी वस्तु के छोटे से भाग का ही निर्माण करता है, पूर्ण वस्तु का नहीं। इससे व्यक्ति स्वावलम्बी नहीं बनता।[1] व्यक्ति का स्वावलम्बन मशीन और आधुनिकीकरण में नहीं है, व्यक्ति का स्वाबलंबन उसके श्रम शक्ति के सही प्रयोग और उसके कार्य से आवश्यकताओं की पूर्ति से है। स्थानीय स्तर से समाज के स्वावलम्बन के लिए स्थानीय व्यवस्था का विकेन्द्रीयकरण और प्रबन्धन विकास आवश्यक है। "विकेन्द्रीयकरण में प्रबन्धन के निम्नतम स्तर पर अधिकारिक निर्णय लिए जाते हैं। विकेन्द्रीयकरण में संस्था के अधिकांश कार्य प्रबंध के नीचे के स्तम्भ पर लिए गये निर्णयों से प्रभावित होते है।[2]

विशाल जनसंख्या वाले राष्ट्रों के लिए विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था ही महत्वपूर्ण है, केन्द्रीयकृत व्यवस्था से सामान्य जनमानस का विकास और उनकी शक्ति का प्रयोग राष्ट्र विकास के लिए कर पाना कठिन होता है। विकेंन्द्रित अर्थव्यवस्था अनेकों दृष्टियों से विकास आयाम के लिए महत्वपूर्ण है।

विकेन्द्रीयकरण में, "अधीनस्थ प्रशासकों को अपने साधन तथा आत्मविश्वास को बढ़ाने का अवसर प्राप्त होता है और इस स्थिति में उन्हें अपने स्वयं के निर्णय लेने होते हैं ; एवं उतरदायित्व वाहन करने पड़ते हैं।[3]

भारत विश्व का बड़ा लोकतंत्र तथा बड़ी आबादी वाला देश है। यहाँ की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि और वन संपदा है। भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार ब्रिटिश काल से पहले इतिहास में बहुत ही सम्पन्न था। 200 सालों की गुलामी के समय भारतीयों की कौशल कला का शोषण और संसाधनों को ब्रिटेन के उद्योगों हेतू प्रयोग किया गया। इसलिए भारत को अपनी अर्थव्यवस्था की नींव को फिर से गढ़ने की आवश्यकता पड़ रही है।

वर्तमान समय में भारत की अर्थव्यवस्था की स्थिति काफी अच्छी है। भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से बढती अर्थव्यवस्था है। भारत का लक्ष्य भी 2047 तक भारत को विकसित और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाना है। भारत इस लक्ष्य की पूर्ति में सक्षम भी है। इस लक्ष्य की पूर्ति के साधन और शक्ति दोनों भारत के पास है। भारत जनसंख्या, युवा शक्ति, कृषि, वन, जंगल, खनिज के रूप में संसाधन से भारत सम्पन्न है। बस जरूरत है, इनका सही और सदुपयोग करने की। अर्थव्यवस्था का विकेन्द्रीयकरण इस दिशा में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। इस दिशा में भारतीय व्यवस्था अग्रसर भी है। यह विकास का बहुआयामी दृष्टिकोण है। यह रोजगार की समस्या का समाधान, संसाधनों का सदुपयोग, हर हाथ को काम और राष्ट्र आय में बृदि के साथ राष्ट्र विकास का सर्वोतम साधन है।

जब देश के हर नागरिक के हाथ में हुनर और काम होगा तभी देश का भविष्य भी उज्ज्वल होगा। "विश्व इतिहास इस बात का साक्षी है कि राष्ट्र विकास में युवाओं की प्रतिभा अतुलनीय रही है। अनेक कार्यो ने समृधि के नये द्वार खोले हैं और उनके मस्तिष्कों ने संभावनाओं के नये आयामों की रचना की है।[4] भारत के बेरोजगार युवाओं का विकास, राष्ट्र विकास के कार्यों से जोडकर ही संभव है। युवाओं की क्षमता और कौशल को पहचानकर राष्ट्र विकास के कार्यों में लगाने का कार्य विकेन्द्रित व्यवस्था में संभव है। विशाल जनसंख्या वाले राष्ट्रों में विकेन्द्रित व्यवस्था ही सफलता के लक्ष्य तय कर सकता है। इसलिए गाँव के किसान, वागवान, शिल्पकार को विकास कार्यों में जोड़ने वाली व्यवस्था विकेंद्रीयकृत व्यवस्था ही रहेगी। इस दिशा में भारतीय व्यवस्था की पहल विकास की नींव के लिए नील का पत्थर बनेगी। आत्मनिर्भर भारत और पारम्परिक उद्योगों का विकास इस दिशा में कार्य करने में देश की व्यवस्था आज आग्रनी भूमिका में है। अंतिम व्यक्ति का विकास भारत सरकार का प्रथम लक्ष्य है। देश की बहुत बड़ी संख्या में आबादी आज गरीबी रेखा से नीचे है।

"यदि भारत के गरीबों को खुशहाल होना है तो उन्हें व्यवसाय और आजीविका के सहायक स्त्रोतों की आवश्यकता है, वे केवल कृषि पर निर्भर नहीं रह सकते।"[5] इस दृष्टि से यदि देखें तो, परम्परागत भारत के हस्तशिल्प पर आधारित छोटे उद्योग बड़े लक्ष्य के हैं। गांवों के लोगों की हाथों की कारीगरी का नमूना विश्व ने लगभग 5000 वर्ष पूर्व ही देख लिया था। जिसने भारत की अर्थव्यवस्था को विश्व में पहचान दी थी। इसलिए भारतीयों को अपने उस प्राचीन हुनर पर विश्वास कर आगे बढना होगा। प्राचीन भारत में जिन वस्तुओं का उत्पादन होता था, वह उत्पादन मशीनों पर नहीं भारत के लोगों की हाथों के हुनर से होता था। जिसने भारत को विश्व अर्थव्यवस्था में विशेष स्थान दिलाया था, "इनके उत्पाद में कोई मशीनरी का उपयोग नहीं किया जाता। सूत, कागज, लकड़ी, मिटटी, पत्थर, धातु, कांच, सीपी जैसा प्रकृति प्रदत कच्चा माल ही उपयोग में लाया जाता है। उपयोग के उद्देश्य के आधार पर हस्तशिल्प एक लोक शिल्प भी है, अध्यात्मिक शिल्प भी और वाणिजिक शिल्प भी ।[6]

2. निष्कर्ष :

विकेन्द्रित अर्थव्यस्था भारत की अर्थव्यवस्था के विकास का आधार है। इस तरह अध्ययन से स्पष्ट है कि भारत के परम्परिक उद्योग जो भारतीयों की कला, भारतीयों के हाथों के हुनर, संसाधनों का सदुपयोग, भारतीयों के आत्मविश्वास का बहुत बड़ा स्त्रोत था। आज जब आत्मनिर्भर भारत की बात हो रही है तो, स्वाभाविक है कि भारत को आत्म निर्भर भारत के लोग और भारत में निहित संसाधन ही बनायेंगे। इसलिए विकेन्द्रित अर्तव्यवस्था इस दिशा में महत्वपूर्ण रहेगा। भारत विशाल जनसंख्या वाला राष्ट्र है। इसलिए ग्राम केन्द्रीय विकास इस दिशा में विशेष महत्वपूर्ण रहेगा। प्राचीन भारत की व्यवस्था भी ग्रामीण पंच परमेश्वर व्यवस्था थी (पंचायत आधारित)। जिसने स्थानीय विकास को गति दी। भारत सरकार ने भी पंचायती राज व्यवस्था को सशक्त कर ग्रामीण संसाधनों के सदुपयोग और विकास को गति देने की दिशा में कदम उठाया है, इतने मात्र से आज भारत की अर्थव्यवस्था को गति मिली है।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. संगीता पंचाल, आधुनिक परिपेक्ष्य में गाँधी जी के विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था आधारित विचारों का भौगोलिक विश्लेषण, IJCRT vol.8, issue.6 जून 2020, पृष्ठ. 4884

2. सुमन कच्छावा, केन्द्रीयकरण बनाम विकेन्द्रीयकरण, international journal of humanities and arts, 2023, 5(2) पृष्ठ.45)

3. सुमन कच्छावा, केन्द्रीयकरण बनाम विकेन्द्रीयकरण, international journal of humanities and arts, 2023, 5(2) पृष्ठ.45)

4. अनिल शर्मा, राष्ट्र विकास में युवाओं का योगदान, प्रवाहिनी अंक 20, 2012-2013,पृष्ठ.13)

5. अरुण तिवारी, महात्मा गाँधी के सपनों का भारत, हस्तशिल्प गाँव की खुशहाली का अनुपम स्त्रोत, योजना, अप्रैल, 2019, पृष्ठ.50) https://afeias.com

6. अरुण तिवारी, महात्मा गाँधी के सपनों का भारत, हस्तशिल्प गाँव की खुशहाली का अनुपम स्त्रोत, योजना, अप्रैल, 2019, पृष्ठ.50) https://afeias.com